Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-IV, May 2015

दमोह जिले में स्वाधीनता संग्रामः—1857 से 1885 तक

डॉ. दिवाकर दिनेश मिश्रा इतिहास विभाग स्वामी विवेकानंद वि. वि. सागर (म. प्र.)

दमोह जिला सागर संभाग के अंतर्गत आता हैं यह जिला मालवा—बुंदेलखण्ड़ पठार पर स्थित हैं। "दमोह जिले का क्षेत्रफल 7,321 वर्ग किलोमीटर हैं"।[1] जिले का नामकरण नगर/मुख्यालय दमोह के नाम पर पड़ा है। "ऐसी अनुश्रुति है कि दमोह का नाम नरवर के राजा नल दमयंती के नाम पर पड़ा है ऐसा कहा भी जाता है कि दमोह नगर दमयंती ने ही बसाया था"।[2] दमोह के चाँदी चोपड़ा नामक स्थान(प्राचीन नाम चौपड़ा पाटी) से प्राप्त षिलालेख में दमनकपुर नामक नगर का उल्लेख प्राप्त होता हैं, सम्भव है कि आधुनिक दमोह नाम दमनकपुर का अपभ्रंष रुप हो। इस संबंध में श्री हीरालाल महोदय का मत है कि "यह दमनकपुर नगर कोई अन्य ही रहा होगा क्योंकि दमोह(दमूह)का अर्थ निवास गृहो का समूह होता हैं"।[3] दमोह जिला प्राचीन चेदि महाजनपद का भाग था, यह जिला मौर्य, षुंग, सातवाहन, गुप्त, हूण, वर्धन वंष, कलचुरि, चंदेल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट,खिलजी वंष, तुगलक वंष, मालवा के सुल्तान, गढ़ा के राजगौड़ वंष, रानी दुर्गावती, मुगल, बुंदेला वंष के षासको के आधीन रहा। इस समय तक भारतीय रजवाड़े आपस में छोटी—छोटी रियासतो में बंट चुके थे और अपने—अपने क्षेत्रों की सीमायें बढ़ाने के लिये आपस में संघर्षरत रहते थे। इसी समय बुंदेलखण्ड़ पर अंग्रेजो का प्रभाव बढ़ता जा रहा था "सन 1814 में लार्ड हेस्टिंग्स ने पिंड़ारियो के दमन करने के उद्देष्य लेकर बुंदेलखण्ड़ मे प्रवेष किया लेकिन उसका उद्देष्य पिंडारियो का दमन मात्र नही था उसके इस उद्देष्य के मूल में बुंदेलखण्ड़ पर प्रभुता स्थापित करना था"।[4] बुंदेलखण्ड़ पर अंग्रेजो का प्रभाव बढ़ता जा रहा था । "अंग्रेजो ने किसानो, जमींदारो एवं मालगुजारो के अधिकार छीन कर बेदखल कर दिया, जमींदारो एवं बकायादारो के विरूद्ध कानूनी कार्यवाही की गयी एवं उनको जमीनों एवं संम्पत्तियों से वंचित कर दिया गया। इस क्षेत्र में किसानो में सर्वाधिक भूस्वामी गौड.,लोधी और बुंदेला राजपूत थे। अंग्रेजो की नीतियो से त्रस्त होकर बुंदेलो ने अंग्रेज षासन के विरूद्ध विद्रोह कर दिया"।[5] इस विद्रोह को बुंदेला विद्रोह के नाम से जाना जाता है। इस विद्रोह के

www.gnrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-IV, May 2015

नायक हीरापुर के षासक हिरदेषाह,सांवत सिंह आदि थे। हिरदेषाह एवं उसके अन्य सहयोगियो को कुछ भारतीय ओहदेदारो ने अंग्रेजो से मिलकर गिरफ्तार करवा दिया और बुंदेला विद्रोह कुचल दिया गया।बुंदेला विद्रोह कुचल जरूर दिया गया था लेकिन विद्रोह की आग अंदर ही अंदर सुलग रही थी। यह आग 1857 के महान विप्लव के रूप में अचानक ही विस्फोट की तरह फूट पड़ी।

सन 1857 के विप्लव का दमोह में प्रांरभ :–

सन् 1857 के उत्तरार्द्ध में दिल्ली तथा मेरठ के विद्रोह की खबरें दमोह में फैल गयी। फलस्वरुप यहाँ भी अंग्रेजो की गुलामी से मुक्त होने के प्रयास किये जाने लगे। इसी बीच 8 जून को झांसी में घटी हृदय विदारक घटनाओं की सूचना दमोह पहुंची उससे भारतीयो में विद्रोह की भावना और अधिक बलवली हो गयी। इसी समय "मई 1857 के प्रारंभ में दमोह जिले में यह अफवाह फैली की आटा और षक्कर में गाय एंव सुअर की हड्डी का चूरा मिलाया जा रहा हैं साथ ही घी में गाय एंव सुअर की चर्बी भी"।[6] इसी समय बानपुर के राजा मर्दन सिंह,शाहगढ़ के राजा बख्तबलीषाह, 42 वीं बटालियन सागर के रिसालदार रुहेला सरदार षेख रमजान ने अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह कर दिया। राजा बानपुर एवं षाहगढ़ ने अंग्रेजो से युद्ध के लिये सेना में नई भर्ती प्रारंभ कर दी, राजा मर्दनसिंह ने घोषणा की कि अंग्रेजी सेना के सिपाहियों को फौज में भर्ती कर लिया जायेगा लेकिन इस षर्त के साथ कि वे अपने हथियार साथ लावें। इसी समय 42 वीं देषी पैदल सेना की दो कंपनियॉ दमोह की सुरक्षा के लिये तैनात थी और इस सेना का कुछ भाग सागर में तैनात था। "सागर में तैनात सैनिको ने अंग्रेजो के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। सैनिको ने यह विद्रोह 1 जुलाई 1857 को किया"।[7] सागर के विद्रोहियों ने सागर केंट के मालखाने एवं रेजिमेंट के ऑफिस को लूट लिया अब विद्रोही सेना दो भागो में बँट गयी, एक टुकडी सागर के ग्रामीण क्षेत्र में चली गयी और दूसरी टुकडी ने दमोह की ओर प्रस्थान किया। "4 जुलाई 1857 को` विद्रोही सैनिकों को जिनके साथ अब अनेक क्रांतिकारी भी शामिल हो लिये थे यह सूचना मिली कि डिप्टी कमिष्नर ने राजस्व खजाना जेल में छिपा रखा है"।[8] इन सैनिको ने जेल पहुँचकर खजाने की मांग की परंतु अंग्रेज सेना के अधिकारियों की सतर्कता की वजह से विद्रोही सैनिक सफल नही हो

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-IV, May 2015

सके। जेल का सूबेदार रंजीत सिंह अंग्रेजो के प्रति वफादार बना रहा। कहा जाता है कि "रंजीत सिंह विद्रोही सैनिको का साथ देना चाहता था पर उसने अंग्रेजो के प्रति वफादारी मात्र इसलिये प्रकट की क्योंकि उसके पूरे परिवार को अंग्रेजो ने अपनी हिरासत में ने रखा था। इन विद्रोही सैनिको ने दमोह नगर को छोड़ कर ग्रामो में जाकर जमकर लूटपाट की।"[9] इसी समय राजा मर्दनसिंह एवं राजा बख्तबली शाह ने दमोह के सभी छोटे–बड़े सरदारो एवं भूस्वामियों के पास संदेष भेजा कि वे स्वाधीनता के इस यज्ञ में सम्मिलित हों। इन दोनो राजाओं के आग्रह पर एक–दो सरदारों को छोड़कर सभी सरदार सहमत हो गये। इन लोगो के साथ अधिकांष लोधी भूस्वामी भी स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हो गये। इनमें प्रमुख नाम हिण्डोरिया के ठाकुर किषोर सिंह का हैं। ठाकुर किषोर सिंह ने अपने भाईयों तथा अनुयायियो के साथ 10 जुलाई 1857 को दमोह पर आक्रमण करके थाने पर अधिकार कर लिया और मुंसिफ मजिस्ट्रेट के कार्यालय पर कब्जा कर उसके अभिलेखों को नष्ट कर दिया। अंग्रेज कैप्टन पिंकी ने 31 वीं बटॉलियन एवं 42 वीं पैदल सेना की सहायता से किषोर सिंह को पीछे ढकेल दिया। पुनःकिषोर सिंह व राजा षाहगढ़ ने 4000 विद्रोही सैनिको के साथ दमोह के ग्रामीण क्षेत्रों पर आक्रमण किया और अंग्रेजी दफ्तरो तथा ग्रामो को लूटा। विद्रोही रणबाँकुरो ने कुमारी चौकी पर साढ़े चार माह तक कब्जा बनाये रखा। 28 जुलाई को अनेक सरदार, ठाकुर किषोर सिंह तथा बख्तबलीषाह की सेना से आ मिले जिनमें रावस्वरुप सिंह, मानसिंह, सोनीसिंह बालकोट आदि प्रमुख थे। इन्होंने पुनः दमोह पर आक्रमण कर दिया परंतु अंग्रेजो की 42 वीं तथा 31 वीं वाहिनी ने इन्हे खदेड़ दिया। इसके पष्चात पुनः 5 अगस्त 1857 को सभी क्रांतिवीरो ने दमोह पर आक्रमण किया। परंतु ये लोग सफल नही हो सके।

इन क्रांतिवीरो को भले ही आक्रमण में सफलता न मिली हो लेकिन इन लोगों के प्रयास से समस्त दमोह जिले में क्रांति की लहर चल पडी। इस घटना के पष्चात अंग्रेजो ने कषोरसिंह, मानसिंह, स्वरुपसिंह एवं सोनीसिंह को जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर भारी इनाम की घोषणा की। राजा किषोरसिंह पर सर्वाधिक इनाम 1000 रुपये था। अगस्त माह तक पूरे दमोह जिले में विद्रोही फैल चुके थे और इन विद्रोहियो का नेतृत्व ठाकुर किषोरसिंह हिण्डोरिया कर रहे थे। "ठाकुर किषोरसिंह के नेतृत्व में अनेक क्षेत्रीय राजा यथा– भानगढ राजा गंगाधर,

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-IV, May 2015

सिंग्रामपुर राजा देवीसिंह, अभाना राजा तेजसिंह, किषनगढ के सूबेदार रघुनाथ राव आदि नेता स्वाधीनता संग्राम के आंदोलन का संचालन कर रहे थे। इस समय अंग्रेज अपने मुख्यालय ही किसी प्रकार सुरक्षित रख सके बाकी सारा नियंत्रण विद्रोही क्रांतिवीरो के हाथो में था"।[10] क्रांति का दमन करने के लिये अंग्रेज अधिकारियों ने जबलपुर संभाग के मुख्यालय से सैन्य सहायता की मांग की 24 अगस्त को नागपुर की पैदल सेना दमोह पहुॅची साथ ही 52 वीं पैदल सेना की टुकडियां दमोह आ चुकी थी। अंग्रेजो ने विद्रोहियो के कब्जे से बालकोट का किला छीन लिया इसके पष्चात हिण्डोरिया स्थित ठाकुर किषोरसिंह के किले के बंद कमरे पर अंग्रेजो ने आक्रमण कर अनेक क्रांतिकारियो को मौत के घाट उतार दिया। 13 सितम्बर को विद्रोहियो ने पुनः दमोह पर आक्रमण किया इस समय दमोह की रक्षा के लिये लेफ्टिनेंट डिक्रेंस को नियुक्त किया गया था मेजर अर्सकाइन की मौके पर सहायता मिल जाने के कारण दमोह नगर को बचा लिया गया। 15 सितम्बर को अंग्रेजो ने हटा को षाहगढ़ के विद्रोहियो से वापिस छीन लिया"।[11] सितम्बर माह के अंत तक सम्पूर्ण दमोह जिले में अफरा–तफरी का माहौल हो गया इस स्थिति से निपटने के लिये अंग्रेजो ने पन्ना राजा के एक अधिकारी षामले जू को दमोह जिले का प्रभार देने का अनुरोध किया। इसी समय जब अंग्रेज जबलपुर की तरफ बढ़ रहे थे तो विद्रोही 52वीं पैदल सेना जबलपुर से दमोह की ओर आ रही थी कंटगी के पास इनका युद्ध हुआ। विद्रोही हार कर भी दमोह की ओर बढते गये और सिग्रामपुर के देवीसिंह से आकर मिल गये और दमोह पर 24 अक्टूबर 1857 को आक्रमण कर दिया। "25 अक्टूबर को रावस्वरुप सिंह वालकोट अपने 200 सैनिको के साथ देवीसिंह से आ मिले इन्होंने मिलकर षामले जू को पराजित कर दमोह नगर से बाहर खदेड दिया इसके बाद विद्रोही नेता देवीसिंह के नेतृत्व में जेल पर हमला कर रक्षको को मौत के घाट उतार दिया "।[12] इस समय विद्रोहियो ने सम्पूर्ण दमोह पर अधिकार कर लिया। "विद्रोहियो का साहस देखकर जनरल हिवटलॉक भी उनसे संघर्ष करने से बचता रहा"।[13] 20नबम्वर को जबलपुर के डिप्टी कमिष्नर ने विद्रोहियो के क्षेत्रो सिग्रामपुर और जबेरा में अग्रेजो ने अपने थाने स्थापित किये परंतु देवीसिंह और मेहरबान सिंह की टुकडियों ने अग्रेजो को पुनः खदेड दिया। विद्रोहियो के दमन के लिये अंग्रेजो ने कूटनीति का सहारा लिया एवं वह अपने उद्देष्य में सफल भी

www.ghrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol,-05, Issue-IV, May 2015

रहे, सन् 1857 के अंत तक यह विद्रोह पूर्णतः समाप्त हो गया। परंतु विद्रोह की भावना लोगो में बनी रही। अब विद्रोह सामाजिक संगठनो, समाज सुधार आंदोलनो एंव अर्थ नीति के विरोध में आंदोलनो में दिखने लगा। इसी समय दमोह जिले में अनेक सामाजिक एवं स्वछिक संगठन गठित किये गये जिनमे दमोह लिटरेरी क्लब ,दमोह डिवेटिग क्लब, रीडिंग क्लब आदि संस्थाये प्रमुख हैं इन सभी संस्थाओ ने दमोह जिले में स्वाधीनता संग्राम के प्रति जन जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया और जिले के लोगो में जागृति उत्पन्न की। सन् 1885 में काँग्रेस की स्थापना के पष्चात राष्ट्रीय चेतना के विकास परिलक्षित होने लगी थी। लार्ड कर्जन की अविवेक पूर्ण नीति के परिणाम स्वरुप आत्याचार और निरंकुष प्रषासन का जो सिलसिला षुरु हुआ उसके परिणाम स्वरुप स्वदेषी एवं विदेषी आंदोलनो का सूत्रपात हुआ और यह विरोध का स्वर धीरे–धीरे सम्पूर्ण भारत में फैल गया जिसका प्रभाव दमोह जिले पर भी पडा।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता हैं कि दमोह जिले में स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम विप्लव से लेकर 1947 तक के समस्त आंदोलनो में यहां के लोगो ने भाग लिया और देष की आजादी में सक्रिय भागीदारी निभायी।

1– दमोह डिस्ट्रिक्ट सेसंस हेण्ड बुक, पृष्ठ 2

2–हीरालाल, दमोह दीपक ,सन 1942 ,पृष्ठ 85

3– हीरालाल, दमोह दीपक, सन 1942 ,पृष्ठ 86

4–जिला गजेटियर मध्यप्रदेष, पृष्ठ 57

5–द हिस्ट्री ऑफ दमोह डिस्ट्रिक्ट, सैय्यद इमदाद अली, अनुवाद षमषुल हुसैन पृष्ठ 24

6–दमोह जिला गजेटियर ,पृष्ठ 58

7–अर्सकाइन नरेटिव्स ऑफ इवेंटस अटेण्डिंग दि आउट ब्रेक ऑफ डिस्टरबेन्सेज एण्ड दि रेस्टोरेषन

ISSN 976-9714

www.gjrws.in

Variorum Multi-Disciplinary e-Research Journal
Vol.,-05, Issue-IV, May 2015

अथॉरिटी इन दि सागर एण्ड नर्मदा टेरेटरीज इज 1857–1888, पृष्ठ 2–3

8–हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेण्ट इन मध्यप्रदेष पृष्ठ 34–35

9–द हिस्ट्री ऑफ दमोह डिस्ट्रिक्ट , सैय्यद इमदाद अली,अनुवाद षमषुल हुसैन ,पृष्ठ 27

10–कर्तव्य,दमोह(हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका) –16 अगस्त 1957

11–दमोह दीपक (मासिक पत्रिका) सितम्बर पृष्ठ 28

12–पार्लियामेंटरी पेपर "दि म्यूनिटी इन इण्डिया" 1857–58,क्र 1 पृष्ठ 57–74, कर्तव्य "साप्ताहिक पत्रिका"

1957

13–क्रांति के चरण, प्रयाग दत्त षुक्ला, पृष्ठ 106

www.ghrws.in